बी.एच.आई.एम.-162 : भारत का इतिहास
(8वीं सदी से 17वीं सदी तक)
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BHIM-162**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.एम. -162/**ए.एस.एस.टी./**TMA/2026-2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) 8वीं से 12वीं सदी सीई तक के महत्वपूर्ण राजपूत राज्यों के उदय और विकास पर चर्चा कीजिए। 20

2) 8वीं से 12वीं सदी सीई तक के प्रमुख शिल्प और उनके विकास पर एक निबंध लिखिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) महमूद ग़ज़नवी के आक्रमणों पर एक टिप्पणी लिखिए। 10

4) विजयनगर साम्राज्य में कला और स्थापत्य के विकास पर चर्चा कीजिए। 10

5) जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब के शासनकाल में मनसबदारी व्यवस्था में क्या परिवर्तन किए गए थे? 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) सल्तनत में कृषि विद्रोह 6

7) मुगल काल में सूफी परंपरा 6

8) राठौर प्रतिरोध 6

9) इबादत खाना और गैर–मुस्लिम भागीदारी 6

10) सुहुमुंग या दिहिंगिया राजा (1497–1539) 6

1) 8वीं से 12वीं सदी सीई तक के महत्वपूर्ण राजपूत राज्यों के उदय और विकास पर चर्चा कीजिए। 20

उत्तर

आठवीं से बारहवीं शताब्दी का उत्तर और पश्चिम भारत अनेक क्षेत्रीय राजवंशों के उदय का काल था। हर्षवर्धन के बाद किसी एक सत्ता का स्थायी प्रभुत्व नहीं रहा। स्थानीय सैनिक सरदारों, सामंतों, भूमिस्वामियों और वंशीय कुलों ने अपनी राजनीतिक शक्ति बढ़ाई। इन्हीं प्रक्रियाओं में विभिन्न राजपूत कुलों की पहचान सुदृढ़ हुई। राजपूतों का इतिहास केवल युद्धों का इतिहास नहीं है; इसमें कृषि-विस्तार, भूमि-अनुदान, मंदिर-निर्माण, साहित्य, व्यापारिक नगरों और सामंती संबंधों का विकास भी सम्मिलित है।

राजपूत पहचान और राज्य-निर्माण की पृष्ठभूमि

राजपूत शब्द का संबंध 'राजपुत्र' से जोड़ा जाता है, किंतु राजपूत कुलों का उद्भव एक ही पूर्वज अथवा एक घटना से नहीं हुआ। इतिहासकारों ने स्थानीय शासक वंशों, जनजातीय मुखियाओं, प्राचीन कुलीन समूहों तथा बाहर से आए कुछ समूहों के सामाजिक-राजनीतिक समावेशन की ओर संकेत किया है। मध्यकालीन प्रशस्तियों में सूर्यवंश, चंद्रवंश तथा अग्निकुल जैसी वंशावलियों के माध्यम से सत्ता को वैधता प्रदान की गई। इन कथाओं को ऐतिहासिक साक्ष्यों के साथ आलोचनात्मक ढंग से पढ़ना चाहिए।

भूमि के विस्तार, सिंचाई, जंगलों को खेती योग्य बनाने और ब्राह्मणों तथा धार्मिक संस्थाओं को अनुदान देने से नए ग्रामीण केंद्र बने। सामंत राजा को सैनिक सहायता और राजस्व देते थे, पर शक्ति-संतुलन बदलने पर स्वयं स्वतंत्रता का दावा भी करते थे। इस राजनीतिक विकेंद्रीकरण के बीच कई सुदृढ़ क्षेत्रीय राज्य सामने आए।

गुर्जर-प्रतिहार और कन्नौज का महत्व

गुर्जर-प्रतिहार उत्तर भारत की प्रमुख शक्तियों में थे। नागभट्ट प्रथम ने आठवीं सदी में राजवंश की शक्ति स्थापित की। वत्सराज और नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया। राष्ट्रकूटों और पालों के साथ कन्नौज के लिए उनका दीर्घ संघर्ष 'त्रिपक्षीय संघर्ष' कहलाता है। मिहिर भोज (नौवीं सदी) उनके प्रसिद्ध शासकों में था; उसके समय विशाल राज्य, संगठित अश्वारोही बल और प्रशासनिक प्रतिष्ठा विकसित हुई। महेंद्रपाल प्रथम के काल तक उनका प्रभाव व्यापक क्षेत्र में बना रहा। बाद में सामंतों की स्वतंत्रता, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा और बाहरी दबावों से प्रतिहार शक्ति कमजोर हुई। प्रतिहार काल की मंदिर-संरचना और संस्कृत साहित्य उनके सांस्कृतिक संरक्षण को दर्शाते हैं।

चौहान अथवा चाहमान

चाहमान राजपूतों का महत्वपूर्ण राज्य शाकंभरी (सांभर) और बाद में अजमेर के आसपास विकसित हुआ। विग्रहराज चतुर्थ ने राजनीतिक तथा सांस्कृतिक प्रतिष्ठा बढ़ाई। पृथ्वीराज तृतीय के समय अजमेर और दिल्ली से जुड़े शक्ति-संघर्ष विशेष रूप से उल्लेखनीय हुए। तराइन के प्रथम युद्ध (1191) में पृथ्वीराज की सेना ने मुहम्मद गौरी का सामना किया; अगले वर्ष द्वितीय तराइन युद्ध (1192) में गौरी की विजय ने उत्तर भारतीय राजनीतिक संतुलन को बदल दिया। पृथ्वीराज से जुड़ी